

DPN 5969

Title : संकरा पूजा *SAN'KATĀ PŪJĀ*

Run. No. 6660

Cat. No.

Micro. No.

Subject धार्मिक विधि *Religious ritual*

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नेपालभाषा ज्वलं धलः

Size in cms. 12.5 x 6

Folios 23

Lines (in a page) 5 *Requiescens list in Nep.*

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Phaniendra Ratna Vajracarya

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thya^saphu /

टिप्पणी : कालिकाष्टक व इयामाष्टोत्त (दात-
रत्न तुति दु)

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Remark : This text also contains hymns
of Kālikā and Śyāma, the goddesses.

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः श्री सैकटा देव्यै ॥ त्रितयेनाबन्ध ॥ जला शोधनं ॥ जला स्नानं चन्दन सिन्दुराक्षत यक्षोपवीत पुष्प,
सिन्दुजम् ॥ अद्यादि यजमानस्यामुक्त नाम्नः संकटागिर्व शान्तिं पूर्वक शरीरा रोगेभ्यै स्वर्ग्यं शुभ
फल प्राप्स्यथ श्री सैकटास्तव पाठ पुस्तकार्चन निमित्त्यर्थः श्री सूर्ययार्चनं नमः ॥

स्वस्ति पापुजाया सर

जामध्याते

वालिष्याते

१५

चौमधि

१०

नेवल

५९

गाडजा

४

धवंकायाव्यते

वालिष्याते

१५

चौमधि

नेवल

१०

गाडजा

५९

वालिष्याते

१०

चौमधि

५९

ॐ नमः श्रीसंकटादये ॥ तित्वनाचम्य ॥
जल (मधु) ॥ जलस्नानं च नन्दनसिन्दूना
कृत्य क्लृपवीर्यपूर्व ॥ अष्टादिके
मानस्यामूकनाम्नः संकटानिष्टमिति पूर्वकमनी
नाना (गोप्य) गुरुलपाफ्यर्थं श्रीसंकटासुवया

० पूरुकार्चननिमित्तार्थं श्रीसूर्यायार्चनमः ॥
पूर्व २ ॥ गुननमस्कान ॥ प्राप्तामयाय ॥ जलपात्र
पूजा ॥ रुक्ममुद्रि ॥ आत्मपूजा ॥ मालिनीय १० ॥
पंचवलिजापस्तोत्र ॥ श्रीसंबलादिदेव ३ ॥ नृसु
त्मापूजा ॥ वि (गव) यासः ॥ ॐ नमः श्रीसंकटा

ॐ कौ सैक गये अमु यरुद्र ॥ ॐ नै नै ॐ कौ विजया
ये अंगु शाखा नमः ॥ ॐ नै नै ॐ कौ काम दायै नै
नीखा स्वाहा ॥ ॐ नै नै ॐ कौ ६४ ख हा नि (ले) मधु मा
खा वषट् ॥ ॐ नै नै ॐ कौ सर्वगाये नै ॐ अना मिखा
है ॥ ॐ नै नै ॐ कौ कायाय (ले) क निखा खा वीषट् ॥
का २

ॐ नै नै ॐ कौ सैक गये कन गत कन पृष्ठा खा अ
मु यरुद्र ॥ ॐ नै नै ॐ कौ हीम लप नाये द्रु दया
यनमः ॥ ॐ नै नै ॐ कौ सर्वनाग हा नि (ले) मि न स
स्वाहा ॥ ॐ नै नै ॐ कौ वा ना ल सी वा सि (ले) मि खा
ये वषट् ॥ ॐ नै नै ॐ कौ द ग उ जा ये के व जा यद्रु ॥

ॐ वें ॐ ॐ की छिन जाये न उरु याय वो षट् ॥ ॐ
वें ॐ ॐ की संक जाये अमुय रुट् ॥ नत ४ ये उनी ॥
आसन ॥ आक्षना दि ॥ ८ ॥ ॐ ॐ ॐ की सिंहा से नाय
नमः ॥ ॐ ॐ ॐ की पद्मा से नाय नमः ॥ ॐ ॐ ॐ
की वना हय कनी दिवी मूलु मा ला वि हृषिगी । स

हमादित्य वेदनी हान केयू नमलिनी ॥ ॐ जाहि
ईम हित्यु कां ला च न उ य हृषिगी । मा ला क म
लु लयू कां पद्म भं खग दा ह नी ॥ ॐ मूल उ म नू ध
नी ख पु च कु वि हृषिगी । प्रवं क्षा ला महा द वी सं
कटी पन म म्भनी ॥ ॐ न पू र्वा २ ॥ न य प्री म कु ल

वलि॥ॐ संकटार्थे विघ्नह विघ्नहृति (लोभी म
हि॥ नन्ना नो दी प्रचोदयात् ॥ आवाहनादि मूडा
दर्भयत् ॥ पाद्यादि चन्दनसिंदूनाक्षतपूज्य
पदीप ॥ ॐ संकटार्थे नमः ॥ अक्षलि ॥ ॐ श्री
संकटशानमय नमः नामय २ पादुकी ॥ ३ ॥ व

उ (ॐ नवलि॥ आम्नायादिनिर्घोषमर्कमूलनव
लि॥ चन्दनादिपूज्यपदीपजाप ॥ १० ॥ स्तोत्र ॥
ॐ संकटजगदम्बगी सर्वदुःखनिवानिर्ली
नाग (ॐ कहर्नादवी नमः ॐ जगदम्बकी ॥ पा०
प ॥ ०७ ॥ दमास्तुति ॥ न्यास ॥ वलि विसर्जन
मि २

सूर्यसाक्षि ॥ ॐ निसि क द पा ० पूजा ॥

ॐ नमः ८ म निधु नाय ॥ ॐ अदि द्यो य उ मान स्य म न
धन वा भर्त्वन निमित्त र्थ ॥ पूर्य नमः ॥ गुन नमः
न ॥ न्यासा ॥ ॐ मं अमु या रु दू ॥ मं द द या य २ ॥ मं
मिन स स्वाहा ॥ मं मिखा ये वो ष दू ॥ (मं क व चा

प दू ॥ मं न उ उ या य व ष दू ॥ मं ४ अमु या रु दू ॥
अ न नार्घ पा य पूजा ॥ आ स पूजा ॥ ॐ मं म न धु रा
य नमः ४ ॥ ॐ आ ध न म क य २ ॥ २ ॥ ॐ कूर्मी स ना
य २ ॥ ॐ गृ ध्र स ना य २ ॥ अ न ॥ ॐ कृष्ण प हु म
दृष्टि ४ खि खि ली जा य मालि क ४ व्या वृ ना स्य म हा

ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ श्रीहेनवाच ॥ ॥
कालीयूजायुना नाथ. लवायुविविधः प्रह
॥ ॐ दाली (मुमुक्षुमिच्छामि. कवचं पूर्व सूचि ॥ १
त्वमेवमनर्त्तनाथ. जहिमान्दः खर्गकटा ॥ ॥
श्रीहेनवउवाच ॥ नहस्यं गृध्रवकासि. हेनवीषा

एवञ्च ॥ २ ॥ उल्लासः मंगलं नाम. कवचं मनुवि
ग्रहं ॥ यत्ति त्वाक्षत्रयित्वा उ. उल्लासं माहयद्वल
रू ॥ ३ ॥ नानाय (अपि यधृत्वा. नानीह त्वा महम्भ
नीम् ॥ आनसं का रुमूनया. शङ्ख त्वाचन घूद्वह ॥ ४
वनदीफां ऊघानव. नावनादिनिम्भ चना

ॐ ॥ यस्याः पुष्पदादि (मम) पित्रे लाकृतिरुयी विदुः
: ॥ ५ ॥ धनाधियः कृवतापि. सुन (मम) रुच्यपति
॥ प्रवंहि सकला देवाः सर्वसिद्धी न्यनाप्रिये ॥ १
श्रीरुगमंगलस्यासुः कवचस्य मृषिः निवः ॥ ५
दानरूपे वगाचदक्षिण कालिकनिताः ॥ १ ॥

ऊगता मोहने दूषु विजययुक्ति मूक्ति ॥ आधिः
ताकर्षण (मम) व. विनियोगप्रकीर्तिता ॥ ५ ॥ निनाम
कालिकापाठु को कोने का कनी यना ॥ को को को
मललाटच. कालिकाखड्गनिधी ॥ ५ ॥ हूँ हूँ हूँ
पाठनपुत्र. को को पाठु मुक्तिर्मम ॥ दक्षिणका

लि क पाउ. घाल यूर्गम मह ग्वरी ॥ १० ॥ कौं कौं कौं
न सन पाउ. ई ई पाउ क पा ल क म ॥ वदन का लिका
पाउ. कौं कौं स्वाहा स्व नू पिनी ॥ ११ ॥ हा विं स ल दः
नी पाउ. महा विद्या खिल पु दाः ॥ ख मू मू ध ना
काली. सर्वा म महि ना क उ ॥ १२ ॥ कौं ई कौं श क

नी पाउ. चामू ॥ द द य म मः ॥ उं ई उं उं सु न द
ई कौं रुट् स्वाहा क क सु ल म ॥ १३ ॥ अ स्वा द नी
महा विद्या. उ जो पाउ सु क रू का ॥ कौं कौं ई ई
कौं कौं क नी पाउ. ष ण द नी ऊ प म मः ॥ १४ ॥
कौं ना हि म (धः) द गं च. द दि (ल) का लि क व उ ॥

ॐ स्वाहा पाठ पृष्ठं च. कालिका सादगम कनी ॥
॥ १५ ॥ ॐ हूं दक्षिण कालिक ॐ हूं पाठ कटि द्व
यं ॥ कालिका द्वादशगम कनी. स्वाहा मंत्रान् यन्मः
ॐ ॥ १६ ॥ ॐ हूं ॐ म स्वाहा पाठः जाननी कालि
का सदा ॥ काली स्रगाशु विधाय. चतुर्वर्ग रुतु

दा ॥ १७ ॥ ॐ हूं ॐ पाठ मांगु लूं. दक्षिण कालि
क वरु ॥ ॐ हूं ॐ स्वाहा पाठः. चतुर्दशगम कनी
ममः ॥ १८ ॥ खड्ग मूषुधना काली. वनदारुयपा
लिनी ॥ विद्यारिः सकला हिम. सर्वा मम रिक्ता
वरु ॥ १९ ॥ काली कपालिनी कूली. कूत कूली

विनाशिनी॥ विषुचिनात (अ) (ग्रे) गु. पुलादि
फाद्यनः त्रिषा॥ २०॥ नीलाद्यनावलाकाच. मा
गामूडासिताचमासु॥ प्रगाः सर्वाः खड्गधना.
मूलुमालाविरुषला॥ २१॥ नकुतुमांदि ग्विदि
रू. वाक्की नानायलीनथा॥ माहृग्वरीचनमूलु.

कोमारीचायनाजिना॥ २२॥ वानाहीनानुसिंदी
चसर्वाग्धमिति रूषला॥ नकुतुस्वायू (पे) दिरू
मांविदिरूयथातथा॥ २३॥ वृत्तिनंकभितंदिव्यं
कवचपत्रमाहुतं॥ तुलोका कर्षलंबुद्ध. कव
चंमसूखादितं॥ २४॥ पुनूपूजाविषयाथ. वि

ॐ
शिवस्य प० नूनः॥ कवचं प्रसक्तं द्वापि या
गुह्यं न च वायू न॥ २५॥ प्रतुक्कुगार्द्धमाचर्य
उत्साक विजयी हवन्॥ उत्साकं काठयस्य
वं कवचस्य पुष्पादगः॥ २६॥ महाकविर्ह
वन्मासा सर्वसिद्धिं भूना हव॥ पुष्पां कुलि

ॐ
कालीकाये मूलं चैव प० सक्तं॥ २७॥ भग
वत्सहस्राणि पूजायाः कृत्वा पूजात्॥
हृद्यं पितृखितं चैव स्वर्गं संक्षेपेन यद्य
दि॥ २८॥ मिखायां दक्षिणवाही कण्ठवा
क्षनयद्वयः॥ उत्साकं माहयन् कुक्षिन् कु

श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

शंकरा पूजा

परमहंस

०१
सांस्कृत्यं यत्कृत्वा ॥ २९ ॥ यत्वा श्वनमान्
ग्रीमान् नानाविद्यानि धिरवन् ॥ बुद्धा मुलि
वग्म मुलि तदा उद्यमं नाह्वः ॥ ३० ॥ नाममा
यान्क्रियानात्री वध्वा वामृगयुत्रिणी ॥ क (७) वा
वामवाहोवा कवचस्यास्य धनं ॥ ३१ ॥ ॥

५
वदूय्याजीववत्सा रुवर्षेवनसंभयः ॥
यंपननिष्यत्या रुक्ता विपि (मिषतः ॥ ३२ ॥
निष्यत्या रुक्कि यर्कत्या शुभान्यथमृत्पूमापू
यात् ॥ सद्वा मृद्विद्वकमुला वा (७) वीमन्दि
नमूर्ख ॥ ३३ ॥ यातागस्तुयमास्त्राय निवः

संश्रवनिष्ठितं ॥ ॐ तिकवचमस्तु ॥ या ऊय
कासिदक्षिणाम् ॥ ३४ ॥ अतलकं पुञ्जपुषि
तस्यविद्यानसिद्धिनि ॥ सहस्राद्यानमाप्रागि
सोचिनामाहमापूयात् ॥ ३५ ॥ ॐ तिमिग्रीहं न व
नकुहं न व हं न वीसम्वादेग्रीदक्षिणकासि

कायाऊनमंगलं नामकवचं समाप्य ॥ ॥
ॐ नमस्तुलिकाय ॥ विष्णुवाचा ॥ अगुरुपातु
मन्त्रेनी ॥ गुरुनाकालिकोवत् ॥ मन्त्रमायामहा
काली ॥ अनामायां महाम्बरी ॥ १ ॥ कनिष्ठायां म
हादेवी ॥ दक्षहस्तज्यास्तु ॥ विजयावामह

ॐ. ममन दु. तु सर्वदा ॥ २ ॥ वाक्मी मा ह. न्नी द
वी. को मा नी वे. क्वी न भ ॥ वा ता ही चे व मा ह. न्नी
वा मू. लु. च रु या न क ॥ ३ ॥ ॐ. ए. न. मा न नः. सर्वा
सर्व न पा तु मां स दा ॥ ३ ॥ उ. न्दी. द. वी. न. थ. (न. यी. या
म. ने. सु. ति. वा. न. ली ॥ ४ ॥ वे. क्वी. वे. व. को. व. नी. उ.

ॐ. नी. च. व. ना. य. धः ॥ दि. ग्नि. दि. इ. दि. म. या. नु. मा. न. दु.
नु. स. वा. ह. ना ॥ ५ ॥ भि. स्वा. या. न. ग. व. नि. दे. वी. ल. श्मी. नि. नः.
सि. पा. तु. मां ॥ ल. ला. ट. ल. लि. ना. पा. तु. तु. वा. म्. (ध. म. ह.
न. नी ॥ ६ ॥ न. तु. ना. ना. य. नी. पा. तु. ना. मि. का. या. नु. पा.
व. ती ॥ (ध. न. याः. का. ल. ना. गी. म. का. ल. नी. न. सि. नी. मू.

खे॥१॥ जि का न द रु वा गी जी क ना ली द न प कि
षू॥ अ सु म मा जि ता द व धे जे न चा मृ न म्भ नी म
॥२॥ क (लु न द रु म वा मा ग न य म्भ व ना जि
गा॥ कू की न द रु का मा दा द द य क म लाम
मा॥ रे॥ पार्थ योः पा तु म रु डा धू रू टी पा तु

पृष्ठ नः॥ गु ष्ट पा तु मा हा मा या भा ह नी म क
टी द य ॥१०॥ जा न द य म हा दा ना जं द योः
पा तु म्भं क नी॥ गु रू ष पा तु म ही मा पा द योः
मु व स र्ध ना॥११॥ पा दा रु ती पू नू डा नी वी न रु
डा स दा स्ति पू॥ न द रु न क न य की म म रु न

ॐ रुयं हडदा हडकाली ॥ नेला त्यकै क न नीधी
प्रपू मयविकल सत्केर्लिको को न क कळा ॥ ला
हने के न क त्याच न ल विनि म ल न नो ल नः
याद (म) हां ॥ दिग्वा सा वा स रु न उ म नि उ ग दि
दं या ऊ वां क लि पू ना व ड्ड न ड्ड प व ड्ड ध ऊ

वि न न ऊ जां सा सि द वी त्व मे व ॥ स गु म म ह उ क
हेः मां स नू पि न द म नेः स रु टा ना मि ना रि मा
ला व ध मू र्दि ध ऊ वि न न ऊ जा त्व म म म न पु
विष्ठा ॥ दृष्टा रु नः पु रु नः पृ थू ऊ द न द ना व
दु ना (ग) नु का श्री मू ला सि च ग रु सा म धू नः

लीमहाकला॥२॥महामूडा महामूडा महानिद्राम
हामूडा॥महाभुजा महालक्ष्मीर्महालग्नमहाद
या॥३॥महामाहा माहृष्टिर्महाजया॥महाधृति
र्महाधाना महामंथु महामृतिः॥४॥महाम्महाय
मा महामिद्रा महानया॥महास्वहा महामाहा महाम
वाधमहासुखा॥५॥महावन्धनमहर्षी महामयवि

का३ कानि३

नामिनी॥महानृणा महामूडा महामिद्रा महामूडा
॥६॥महामहीनूदायासिर्महाजया महानखा॥महा
कानिर्महाकानिर्महाजानिर्महामतिः॥७॥महा
गम्मा महामूडा महामयवगवासिनी॥महामयमयी
मागा महामाया महानवा॥८॥महास्वनाग्रीर्महानीः
यावृत्तीचलिका मिवा॥महाकला महामाहा महाम
नामहाधना॥९॥महानीला महामेला महामाहा म

हावला॥ महाविना महाविला. महाहृदय मस्तिनी ॥
॥१०॥ महाविद्या महासाक्षा. महाभक्त महामती महाभू-
ली महादय्या महादः स्वपूनासिनी ॥११॥ महासी कपुदा
माहा. महादका सदायली ॥ महाभूमा महावाली. महा-
व्यक विनासिनी ॥१२॥ महाका नाम महाक्षना. महामा-
या चखेवनी ॥ महाकर्मकरी खाम्या. महस्वर्गपुदा

यिनी ॥१३॥ महाविषयी विषहा. महादर्शनपुष्पसि-
नी ॥ महादर्शन महागत्या. महाकला मवासिनी ॥१४॥
महासूतनी सुरगम. महश्चाव महासगी ॥ महापुण्यं
मिना निह्या. महापुनक नालिनी ॥१५॥ महाभक्ति
महाभक्ति. महामंगल कानिनी ॥ यं देकीरु
यदुक्ता विषम स्कारवद्यदि ॥१६॥ लाहय ऊन

मधुसूक्तं सुसु नम्यति व नं ॥ राजानादा सतां यांति
रुवे सर्वज मप्रियः ॥ ११ ॥ अचलां मिथमा प्रातिनस्य
नम्यं सुयदुवा ॥ संग्राम विजयं कुं न सगवत्यनेन
न निवे ॥ १२ ॥ न वि संकुम गदहं न मृग्युः पावके ज
त ॥ नाकोले मनलं तस्य कदाचित्सुत विषादि ॥ १३ ॥
यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति नित्यम् ॥ वंदे ॥

नाकिमिहा कनु सर्वसिद्धिप्रदं नृत्तम् ॥ २० ॥ ॐ ति
ग्री नृदया मले ते न वसम्वादममामाक्षरु नम गना
मस्तु सर्वम् ॥ एकनालवदनां धारां मूककभीचकु
र्ज्जां कालिकांददिभ्यदिवा मूनुमालावितुषिगां
स्वस्ति श्री जनरत्नभीमसेनथापाकस्य पत्रम्

ॐ

हनीतकीवजाकूछूरमनाउंवाकवि
अजाजीयाजमाउधूहूहीमधूकस
धव॥असूतूहीतधावासीधंखपू
षीधतावली॥प्रगानिसमरागमनि
पुष्कचूधनिकानये॥रकथत्यान

रुकायरकथन्मधूसर्चिषा॥सफत्रा
जीरवेन्मधधनाजीरुगारुव
पुक्विगतिनाजुधधिवमधधुकि
हवै॥अन्यस्तान्मिर्नगुर्ननिया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मयूनां रवे दग्निं
को विलासां स्वर्गं यथा ॥ एवमस्वर्गा
चूर्णं देवानामपि इन्द्रं ॥ ॥ ॥
स्वस्तित्वस्तित्वस्तित्वस्तित्वस्तित्वस्तित्वस्तित्वस्तित्व

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसर्वस्वार्थे नमः ॥ श्री
गुरुवे नमः ॥ ॥ स्वस्ति श्रीजनने लही मम
नमो वाकस्य पुरुष ॥ आगविषमति पुरुष
दक्षिणं हृदयं संमकाची किदान उमादान इदा
न ॥ सिपा सिपा ह क य ॥ चित् उपा न राग